शब्दालंकार

अनुप्रास अलंकार

परिभाषा :- जहाँ किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण एक से अधिक बार आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे:- चारु चंद की चंचल किरणे, खेल रही हैं जल थल में।

'च' वर्ण आवृत्ति होने के कारण

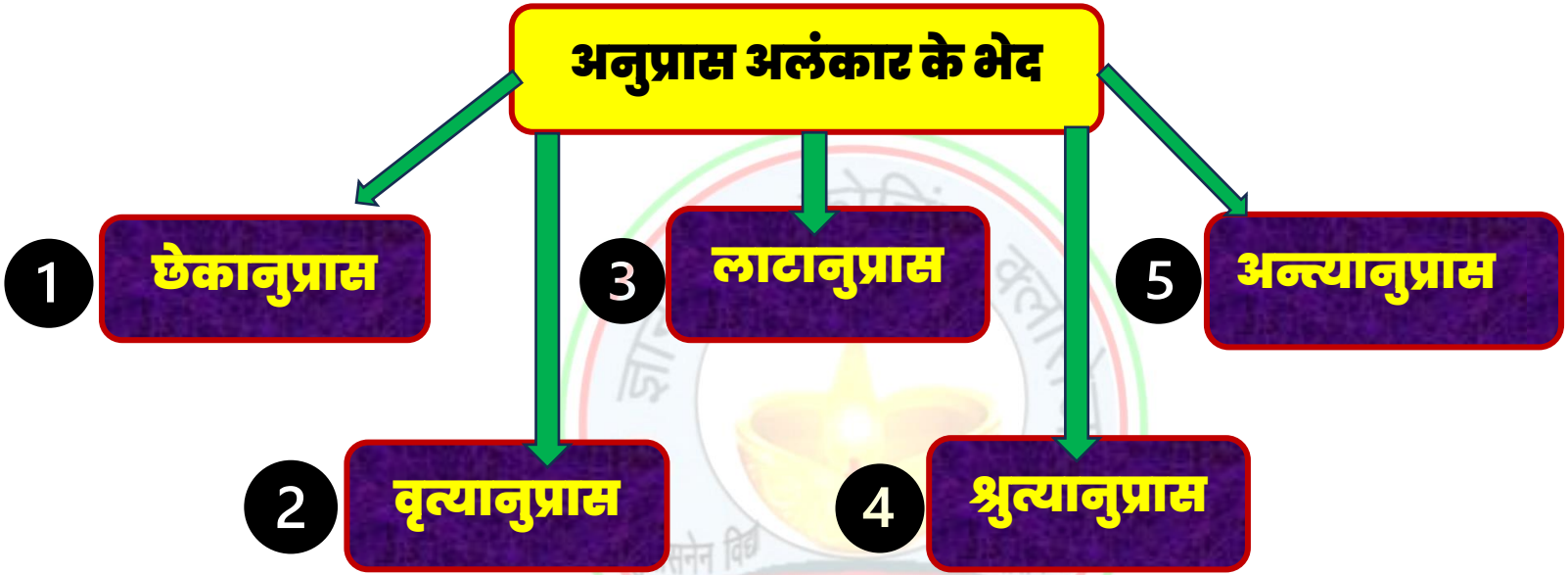

Comptetion Classes

छेकानुप्रास

- छेक का अर्थ है- वाक्य चातुर्य

जहाँ पर कोई वर्ण आवृत्ति स्वरूप या क्रम से केवल दो बार आए, वहाँ छेकानुप्रास होता है।

Comptetion Classes

उदाहरण :- इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती है।

अन्य उदाहरण –

- वर दंत की पंगति कुन्द कली।
- जेहिं सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करि-वर बदन
- भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
- हरषित महतारी, मुनि मनहारी, अद्भुत रूप निहारी।
- अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रूज परिवारू ॥

वृत्यानुप्रास

जहाँ किसी पंक्ति में एक वर्ण अथवा अनेक वर्णों की आवृत्ति कई बार हो, वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है।

जैसे :-

द्वार में, दिशान में, दूनी में, देस-देसन में, देखौ दीप-दीपन में, दीपित दिगंत है।
बनन में बागन में, बेलिन-नवेलिन में, बिपिन में, ब्रज में बगर्यो वसंत है।

इस छंद में 'क' 'प' द' ब' वर्णों को आवृति कई बार होने से वृत्यानुप्रास अलंकार है।

Comptetion Classes

अन्य उदाहरण–

- तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहुछाये।
- मुदित महीपति मंदिर आये। सेवक सचिव सुमंत बुलाये॥
- चित चैत की चाँदनी चाव चढ़ी। चर्चा चलिब कि चलाइये ना।

सिन्धु कोचिंग क्लासेस
Comptetion Classes

श्रुत्यानुप्रास

जिस भी पंक्ति में अनेक ऐसे वर्णों का प्रयोग मिले जिनका उच्चारण स्थान एक हो, वहाँ श्रृत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:-

तेहि निसि में सीता पहँ जाई। त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई।।

उपरापेक्त छन्द में 'दन्त्य वर्णों' 'त' 'न' 'स' को कई बार आवृत्ति है।

अन्य उदाहरण

- तुलसीदास सीदत निस दिन देखत तुम्हार निठुराई।
- किस तपोवन से किस काल में बता मुरली कल नादिनी।

Comptetion Classes

लाटानुप्रास

लाट का अर्थ होता है- समूह

जिस पंक्ति में शब्दो या वाक्यों की आवृत्ति हो और उनका अर्थ भी एक हो, केवल अन्वय करने मात्र से तात्पर्य अर्थात् अर्थ परिवर्तित हो जाय, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

Comptetion Classes

➢ पूत सपूत तो क्यों धन संचिय ?
पूत कपूत तो क्यों धन संचिय ?

स्पष्टीकरण :- सुपुत्र के लिए धन संचय की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह अर्जन की क्षमता रखता । दूसरी ओर कुपुत्र के लिए धन संचय का कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि वह अपने अविवेक से उस धन को अविलम्ब समाप्त कर देगा।

अन्य उदाहरण

- औरन के जाँचे कहा, निज जाँच्यों सिवराज।
  औरन के जाँचें कहा, जनु जाच्यों सिवराज ॥
- सुमनस मोद विनोद निकुंजों में करते थे।
  सुमनस मोद विनोद निकुओं में करते थे॥
- नाचत रसाल मन मोर हरि यारी मैं तो,
  नाचत इतै हैं मन मोर हरियारी में।

- मन मोरमा नैन तो मन मोर मानै ना।
- पराधीन जो जन, नहीं स्वर्ग नरकता हेतु ।
  पराधीन जो जन नहीं, स्वर्ग नरकता हेतु ॥
- जननी तू जननी भई, विधि सन कछुन लखाय ।
  जननी तू जननी भई, विधि सन कछु न लखाय ॥
- मधुखण्डन परिनाम है, सियरानी को पीय।
  मधुखण्डन परिनाम है, सियरानी को पीय।

अन्त्यानुप्रास

जिस रचना की पंक्ति के दोनों चरणों या पदों के अन्त में स्वर व्यंजन की समानता हो, यहाँ अनुप्रास अलंकार होता है

उदाहरण:

छिन उधारति छिनु सुमति राखति छिन छिपाई।।
सबु दिनु पिय खंडित अधर, दरपन देखत जाई ।।

छन्द के चणरान्त 'इ' स्वर की आवृत्ति या समानता है। अतः यहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

बाल कहाँ लाली भई, लोइनु कोइनु माँह
लाल तुम्हारे दुगनु की, परी दुगनु में छाँह
मेरे मन के मौत मनोहर। तुम हो प्रियवर मेरे सहचर॥

- 'तुक' भी एक प्रकार का अन्त्यानुप्रास अलंकार है, जो छन्दों के चरणान्त में ही रहता है।
- अन्त्यानुप्रास अलंकार को व्यभिचारी अलंकार भी कहा जा सकता है, क्योंकि यह प्रायः सभी अलंकारों में पाया जाता है
- अनुप्रास का यह भेद उभयालंकार की श्रेणी में आता है।

Comptetion Classes